स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा - तृतीय खण्ड
(पंचम पत्र - हिन्दी कथा एवं नाट्य साहित्य)

- डॉ० मुन्ना साह
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

II वस्तुनिष्ठ प्रश्नोत्तर - नाटक

1. जयशंकर प्रसाद के नाटक 'चन्द्रगुप्त' का प्रकाशन सर्वप्रथम किस दूसरे नाम से भी किया गया?
   - अभिनव चन्द्रगुप्त

2. 'चन्द्रगुप्त' नाटक के प्रमुख पात्रों के नाम क्या है?
   - चन्द्रगुप्त, चाणक्य, शकटार, सिंहरण, कार्नेलिया, कल्याणी, एलिस, आम्भीक, राक्षस, पर्वतक, सिल्यूकस, मालविका, अलका, सुवासिनी।

3 प्रसाद के नाटकों पर किस नाटककार का प्रभाव मिलता है?
   - बांगला नाटककार द्विजेन्द्रलाल राय तथा अंग्रेजी के विलियम शेक्सपीयर

4. चन्द्रगुप्त नाटक के प्रमुख संवादों को स्पष्ट करें?
   → "यदि प्रेम ही जीवन का सत्य है तो, संसार ज्वालामुखी है।"
   - कार्नेलिया सुवासिनी से
   → "महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है।"
   - चाणक्य चन्द्रगुप्त से
   → "अरुण यह मधुमय देश हमारा!
   जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।"
   - कार्नेलिया
   → हिमाद्रि तुंग शृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती
   स्वयं प्रभा समुज्वला स्वतंत्रता पुकारती।
   - समवेत गायन
   → "मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के श्यामल-कुंज, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुई शैल श्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चाँदनी, शीतलता की धूप और भोले कृषक तथा सरला कृषक-बालिकाएँ, बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमाएँ हैं।"
   - कार्नेलिया चन्द्रगुप्त से

5. प्रसाद के किस नाटक को हिन्दी का प्रथम गीति नाट्य माना जाता है?
   - करुणालय

Scanned with CamScanner